ISSN : 2583-2948

योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' के नवगीत

योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'
ए.एल.-49, उमा मेडिकल के पीछे,
दीनदयाल नगर-प्रथम्, काँठ रोड,
मुरादाबाद- 244105(उ०प्र०)
मोबाइल- 9412805981

1.....गूगल युग में

अब तो डाक-व्यवस्था जैसा
अस्त-व्यस्त मन है

सुख साधारण डाक सरीखे
नहीं मिले अक्सर
मिले हमेशा बस तनाव ही
पंजीकृत होकर
फिर भी मुख पर खुशियों वाला
इक विज्ञापन है

गूगल युग में परम्पराएँ
गुम हो गईं कहीं
संस्कार भी पोस्टकार्ड-से
दिखते कहीं नहीं

ISSN : 2583-2948

बीते कल से रोज़ आज की

रहती अनबन है

नई सदी नित नई पौध को

रह-रह भरमाती

बूढ़े पेड़ों की सलाह भी

रास नहीं आती

ऐसे में कैसे सुलझे जो

भीतर उलझन है

2... मूक-बधिर तहज़ीब

घर की फ़ाइल में रिश्तों के

पन्ने बेतरतीब

सुख-दुख कैसे बँट पायें, जब

बातचीत तक मौन

मोबाइल में बन्द हुए सब

साँकल खोले कौन

दिखता नई सदी में घर-घर

कैसा दृश्य अजीब

मिला मान-मर्यादाओं को

ISSN : 2583-2948

जिस दिन से वनवास

अपनेपन की सेहत में भी

हुआ तभी से ह्रास

किंकर्तव्यविमूढ़ ही रही

मूक-बधिर तहज़ीब

सुबह-शाम दिन-रात यही बस

होता रहा मलाल

सुधर न पाये अनुशासन के

बिगड़े सुर-लय-ताल

काम नहीं आ पायी कुछ भी

अक्षम हर तरकीब

3....कोरे कागज़ पर

किसने लिखे शब्द कटु, घर के

कोरे कागज़ पर

कोशिश तो यह थी अनुभव की

श्रेष्ठ सूक्तियाँ हों

या फिर जीवन-दर्शन की

जीवंत पंक्तियाँ हों

किन्तु न जाने पनपे कैसे

ISSN : 2583-2948

गंधहीन अक्षर

मन से मन की मूक-बधिर-सी
भाषा पढ़ लेते
काश त्याग की, अपनेपन की
गाथा गढ़ लेते
तो फिर इतने व्यथित न होते
स्वर्णिम हस्ताक्षर

व्यवहारों के सूत्रवाक्य-से
भाव जगें शायद
खुशहाली के कालजयी कुछ
गीत उगें शायद
उजले कल की आशा में है
मन का संवत्सर

4....वृक्षों से संवाद

पत्तों को करना होगा फिर
वृक्षों से संवाद

जानेंगे, समझेंगे बतियाहट की

ISSN : 2583-2948

भाषा को

आँधी-बारिश में भी जीवन की

परिभाषा को

मंत्रमुग्ध कर देगा फिर

हरियाली का अनुवाद

तनों-टहनियों से हर दिन

अपनापन कैसे हो

शब्दों से व्यवहारों में

मीठापन कैसे हो

यही सीखकर पुख्ता होगी

रिश्तों की बुनियाद

आवश्यक है सन्नाटे की,

जड़ता की टूटन

तभी रहेंगे जीवित आगे

अभिनव सोच-सृजन

कभी न हावी होगा इससे

सपनों पर अवसाद